कूप जल जीवन आधार

-शैरिल शर्मा

जीवन के एक ऐसे स्रोत के बारे मे बात करें जो माता की तरह पालन और पिता की तरह पोषण करता है। 'जल' ही तो है जो जीवन रूपी घट को लबालब भरता है। मनुष्य ने प्रकृति के साथ इतना खिलवाड़ किया है कि प्रकृति के अंधाधुंध दोहन के कारण प्राकृतिक संपदा, अथाह होते हुए भी चिन्ता का विषय बनी हुई है। सभी जानते हैं कि वायु के पश्चात सबसे ज्यादा जरूरत पानी की होती है। हमारे आहार में भी 60-70 प्रतिशत प्रयोग पानी का होता है किन्तु हर घर, हर क्षेत्र में हमें पानी का दुरुपयोग देखने को मिल जाता है। संचार आदि के माध्यम से भी पानी बचाने के लिए विज्ञापन देखने-सुनने को मिल ही जाते हैं।

वर्तमान समय को देखकर लगता है पानी का संकट और भी भीषण होता जाएगा ? बढ़ते